एक स्वप्निल प्रेमकथा

प्रेम रंजन अनिमेष

एक स्वप्निल प्रेमकथा

(कहानी संग्रह)

प्रेम रंजन अनिमेष

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितम्बर, 2022

© प्रेम रंजन अनिमेष

अनुक्रम

एक स्वप्निल प्रेमकथा	3
उसने नहीं कहा था	34
पंच परमेश्वरी	86
गीत गाथा	114
पंचमी..... (एक स्मृति उत्सव)	147

एक स्वप्निल प्रेमकथा

कमरे की खिड़की खोली। अब उतना पास नहीं था। पर इतना फासला भी नहीं कि नजर से दूर। और इस दूरी से देखने की हसरत और बढ़ गयी थी। यहाँ से उसके घर की छत दिखाई देती और बरामदा। कभी नजर आती वह भी। सुबह शाम अकसर छत पर नहीं तो ऊपरी तल के ओसारे में। किस्मत अच्छी हो तो कभी कभार दिन में एकाधिक बार। हाथ में कुछ पढ़ने के लिए रख लेता और वहीं अपने कमरे की खिड़की के पास बैठा रहता। देखते हुए कि कोई देखे नहीं। देखे भी तो सोचे पढ़ रहा है। या पढ़ते हुए कुछ सोच रहा। खिड़की से बाहर देखते हुए। दूर किसे देख रहा किसे पता ? शायद 'उसे' भी नहीं !

अच्छा था ! कोई विघ्न बाधा नहीं। खिड़की और 'उसके' घर के बीच जमा हुआ पानी और जलकुंभियाँ। यहाँ से वहाँ तक फैली हरियाली। देख कर आँखों को सुकून मिलता। कोई दीवार नहीं उनके प्यार के बीच और जो कुछ है इसी तरह हमेशा हरा भरा रहेगा ! अलबत्ता वहाँ पहुँचने का रास्ता जरा घूम कर था। लेकिन देखने में अधिक दुराव नहीं। इस दूरी से भी उसे उतना ही साफ साफ देख सकता था। माथे पर आयी लटें और होंठों के ऊपर की हल्की रोमरेखा भी !

छत उसका बिना पलस्तर का था। कभी मुँडेर से लग कर आगे की ओर झुक कर खड़ी होती या सामने की छत पर या नीचे गली में किसी से बात करती तो खुरदरी